१०९. मानव ही ज्ञानावस्था में है प्रमाण का आधार

०१-१०-१३

होने के अर्थ में अस्तित्व को पहचाना गया है | होने के अर्थ में चारों अवस्था होना नियति विधि है | नाम दिया है नियति- मतलब जिसमें निरंतर क्रिया हो, परिवर्तन हो | परिवर्तन सहित अस्तित्व को नियति कहा | मूल रूप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति के रूप में अस्तित्व को पहचाना | अस्तित्व निरंतर अपने स्वरूप में प्रस्तुत है | प्रकृति चार अवस्था में है | पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान अवस्था नाम दिया है | विज्ञान के अनुसार जीवावस्था में गण्य है | विकल्प के रूप में मानव ज्ञानावस्था में अकेले है | मानव ही समझदार होने के अर्थ में ज्ञानावस्था कहा है | समझ के अर्थ में विकल्प को प्रस्तुत किया है | विकल्प अपने स्वरूप में अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान है | ज्ञान के रूप में ज्ञाता का रहना आवश्यक रहा है | ज्ञाता के रूप में हर मानव को पहचाना है; हर देश, काल में पहचाना है | भाषाएँ भौगोलिक आधार पर सृजित हुआ है | हर भाषा सच्चाई को समझने के अर्थ में है | सच्चाई एक ही है, वो है होने के रुप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति के रूप में, सह-अस्तित्व रूप में | ये तीनों नाम हमारा दिया है | क्रम विधि से इनमें सत्ता में सम्पृक्तता के आधार पर क्रियाशीलता की प्रवृति है |

इसका प्रमाण पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था प्रभावित होना देखा गया है | विकल्प विधि से इसको प्रस्तुत किया है | विकल्प का मतलब भौतिकवाद, आदर्शवाद दोनों विधि से सोचा गया, समझा गया, निर्णय किया गया के विकल्प में ये विकल्प है, समझा गया | ज्ञानावस्था के मानव, ज्ञान के अनुसार जीना, विचार के अनुसार करना, आशा के अनुसार भोगना ये देखा गया है | जीवन का ये महिमा देखने के पश्चात ये पता चला कि हर मानव सुखी होना चाहता है | हर देश, काल में मानव सुखी होना चाहता है | हर परिस्थिति में मानव सुखी होना चाहता है | सुख के स्वरूप को खोजा गया, पता चला समाधान=सुख, समस्या=दुःख | इस क्रम में मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर ज्ञान विधि से जीने पर दुःख का कोई आधार ही नहीं है | ज्ञान समाधान के रूप में ही व्यवहृत होता है | समाधान समझदारी से, समृद्धि श्रम से; श्रम के लिये भौतिक, रासायनिक वस्तु से रचित शरीर है, जिसको जीवन चलाता है |

जीवन ही ज्ञान का धारक वाहक है | इस विधि से मानव ज्ञानावस्था में होने का आधार पूरा होता है | ज्ञानपूर्वक जीने से सर्वतोमुखी समाधान ही अभ्युदय के नाम से बताया है | आदर्शवाद रूपी आध्यात्मवाद के अनुसार वेद वर्णित विधि से चार वर्ण, चार आश्रम होता है | चार वर्ण, चार आश्रम अपना अपना काम करना ही अभ्युदय है | यह मनु धर्म शास्त्र में लिखा है | इस विधि से अभ्युदय को मनुष्य का कर्तव्य को ही बताया गया है | विकल्प विधि से कर्तव्य को ज्ञानपूर्वक कहा, समाधान समृद्धि के अर्थ में, ज्ञान विधि से समाधान, ज्ञान विधि से श्रम करने से समृद्धि सम्पन्नता बनता है | ऐसे समाधान, समृद्धि सम्पन्नता ही अखण्डता एवं सार्वभौमता को प्रमाणित करता है | अखण्डता को उत्सवों के रूप में प्रमाणित करना, सार्वभौमता को व्यवस्था के रूप में प्रमाणित करना ज्ञानावस्था का विशेषता है | इस विशेषता के साथ जीता हुआ मानव ही अखण्डता, सार्वभौमता को प्रमाणित करता है | उसके पहले परिवार में ही समाधान, समृद्धि को प्रमाणित करता है | इस ढंग से विभूषित मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व को प्रमाणित करता है | यही सार्थक स्वरूप है, ज्ञानावस्था का सार्थकता ही चारों अवस्था का संतुलन है | इसे अध्ययन करने के लिये विकल्प ही अभी तक प्रस्तुत है | वेद विधि से हमें यह भी पता है, कुछ

ऋचाओं को विकल्प के अर्थ में प्रस्तुत किया जा सकता है | अर्थात वेद के भाषा को हम हमारा अर्थ देने से, न्य परिभाषा देने से विकल्प का मूल सूत्र व्यक्त हो सकता था | विद्वान लोग इससे सहमत नहीं हुए, फलस्वरूप हमें

अपना भाषा का प्रयोग करना पड़ा | इसका दूसरा कारण रहा – वेद परम्परा छिन्न भिन्न होकर अनेकों सम्प्रदायों और वाद-विवाद में बंट चुका था, फस चुका था | वेदों में विरोधाभास को लेकर तो हम सर्वप्रथम पीड़ित हुए थे ! इसीलिए तो साधना किया था | वेद के ही भाषा प्रयोग करने से यह अनुसंधानित वस्तु उसके व्याख्या जैसे लगता, उन्ही बहसों में फसंता | अभी जीव चेतना में जीता हुआ मनुष्य इसके साथ यही करता | इसीलिए उस भाषा परम्परा को हमने त्याग दिया | यह घटना 1970 की समय में हमारे साथ प्राप्त हुआ | इसके आधार पर हम सोचने लगे, अब क्या किया जाय | तब यह निश्चय किया मैंने | अपने भाषा से प्रयत्न करें | अपना भाषा कैसे पहचाना जाय, हम किसी भाषा का विद नहीं हैं | इसके बावजूद हम बात करने में पंडित रहे | हमारे पास चार भाषा थी इसको लिखते समय में | मैं स्वयं कर्नाटक प्रांत का रहने वाला हूँ, कन्नड़ भाषा प्रयोग करने वाला हूँ | हमारा मातृ भाषा कन्नड़ है | दूसरा भाषा संस्कृत है | हमारा परिवार में पाला है | तीसरा भाषा इंग्लिश, चौथा भाषा हिन्दी |

चौथा भाषा में हम कैसा लिख दिया? जहाँ साधना किया वो जगह का नाम है अमरकंटक | पौराणिक नाम है अमराँकट | जहां नर्मदा जी का उदगम स्थली है | नर्मदा नदी पश्चिम दिशा में बहती है | बाकी नदियाँ पूर्व दिशा में बहती हैं | नर्मदा नदी के किनारे आने का क्या अर्थ था? इसके लिये पुराण पंचांग यही है कि जब मैंने निश्चय किया, साधना करके ही अनुसंधान हो सकता है तब साधना के लिये तीन स्वरूप प्रस्तुत हुआ - ज्ञान विधि से साधना अर्थात अध्यात्मिक विधि से साधना,आधिदैविक विधि से साधना, आधिभौतिक विधि से साधना | अधिभौतिकवादी साधना के रूप में आगम तन्त्रोपासना नाम को बताया है | वेद के अनुसार अथवा वेद सम्मत विधि से इसे आधिदैविक विधि से प्रस्तुत किया | आध्यात्मवादी विधि से ज्ञान योग बताया | आध्यात्मवादी सहमत विधि से अधिदैवीवाद, अधिभौतिकवादी से योग विधि को वैदिक परम्परा में लिख चुके हैं |

जिसको भले प्रकार से अध्ययन करने से यह पता चला कि आधिदैविक विधि से उपासना करने से देवता के स्वरूप में स्वयं को समझते हुए देवोपासना करने से तीनों शक्तियाँ –क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति और ज्ञान शक्ति जागृत होती हैं | तीन शक्तियों का नाम इस प्रकार से दिया गया है | वेद विचार में आध्यात्मवाद, अधिभौतिकवाद, अधिदैवीवाद, ही आगम तन्त्रोपासना के नाम से प्रचलित है | यह तीन प्रकार से आया - विष्णु आगम तंत्र, शैव आगम तन्त्र, शाक्त आगम तन्त्र | इन तीनों का अध्ययन करने से यह पता चला, तीनों विधि से साधना करने से तीनों प्रकार की शक्तियां जागृत होने को कहा | इसी आधार पर हमने आगम तंत्रोपासना को अपनाया | इसमें प्रधान रूप में शक्ति केंद्रित साधना को मैंने माना | शैव और विष्णु को छोड़ दिया |

शास्त्रों में देवोभूत्वा देवोनिष्जियेत लिखा है | इसी आधार पर न्याय विधिपूर्वक स्वयं को देवरूप में मैंने देखा | इष्ट देवता का आराधना किया | आराधना का विधि “श्री विद्या” रही | क्रम विधि से अध्ययन करने से इसको हमने देवता का कृपा को दया रूप में देखा | वो दया सहज विश्वास रूप में हम विकल्पात्मक ज्ञान सम्पन्न हुये | समाधि में जो ज्ञात नहीं होता है, उससे संपन्न हुए – संयम से | इसको संसार का कृपा से प्राप्त हुआ, संसार को अर्पित करना चाहिए – ऐसे माना | हमारे पास चार भाषा एक सा रहते हुये किस भाषा में लिखना है इसको सोचा, जहाँ साधना किये हैं वहाँ के लोगों का जो भाषा है उसी में लिखना चाहिए ऐसा निश्चय किया | जहाँ मैं साधना किया, अमरकंटक में हिन्दी बोलने का प्रचलन है | इसके आधार पर मैं हिन्दी में लिखने को तैयार हुआ | इसका आधार और कुछ नहीं रहा | लिखने को जब तैयार हुआ, सर्वप्रथम शब्द को पहचानने की बात

आती है | शब्दों को पहचाना तद्भव, तत्सम के रूप में देखा गया जिसमें से तत्सम शब्दों को देखा तो पता चला कि ये सब संस्कृत शब्द के रूप में तत्सम, हिन्दी शब्दों में तद्भव नाम दिया |

संस्कृत शब्दों का मूल स्वरूप को धातु कहते हैं | हम धातुओं को छोड़ दिया | ध्वनि को पकड़ा | ध्वनि के आधार पर परिभाषा किया | परिभाषा संहिता हमारा लिखा हुआ, विकल्प के रूप में है | इसी क्रम में धातु की जगह में ध्वनि के आधार पर परिभाषा करते हुए जब पूरा कर पाए तब इसको लिखने का आधार को स्वीकारा | दूसरा कोई किसी से बात करने का जगह नहीं रहा | इसको स्वीकारने के बाद प्रयासों में करीब तीस वर्ष लगा | उतना ही समय संसार को देने में लगा | इस प्रकार ६० वर्ष का समय साधना, और साध्य के बाद बीस वर्ष | दूसरा भाषा में साधना, साध्य के बीच ३० वर्ष; साध्य को समर्पित करने में ३० वर्ष | इस प्रकार हम पूरा समय को सदुपयोग करने में सफल हुये | ६० वर्ष समय सदुपयोग हुआ |

इसमें एक भी पैसा पैदा करने का व्यवस्था नहीं रहा | मुख्य बात यही है | पैसे के बिना कैसे साधना हुआ? यह प्रश्न होता है | इसके बारे में यही कह सकता हूँ साधना काल में कोई पैदा नहीं करते रहे | इसके वावजूद यहाँ स्थानीय बुजुर्ग लोग एक खाली जगह में कृषि करने के लिये कहा | उसको करते-करते धरती बहुत सारा दिया | उसी से बच्चों का, हमारा सबका निर्वाह होता रहा | इस क्रम में हम यह समझ गये, सच्चाई के साथ चलने से प्रकृति अनुकूल होता है | यह विश्वास हुआ | इसी क्रम को मानव जाति के साथ प्रयोग करने से मानव को भी अनुकूल होगा, ऐसा सोचा | उसी आधार पर हिन्दी में लिख कर के यहाँ के स्थानीय लोगों को समझ में आने की भाषा में प्रस्तुत किया | दर्शन रूप में कहने में समय भले लग गया तीस वर्ष | तीस वर्ष ज्ञान प्राप्त करने में लगा | इस प्रकार से साठ वर्ष लगा है | तब तक २०१० तक पहुँच गये | आगम तंत्रोपासना विधि से हमने साधना किया | आगम तंत्रोपासना का प्रलोभन यही रहा, तीनों शक्तियां जागृत होना | किसी से हमको लेना नहीं है, देना ही है | इस विधि से हम अपने को मान लिया | यह सच है न्यायपूर्वक जी पाया, समाधानपूर्वक जिया, अनुभवपूर्वक जिया | इसी क्रम में जी कर इस पूरा बात को विकल्प में लिखा, समर्पित किया; जिससे एक पैसे को अभी तक नहीं लिया है | इससे पता लगता है, यही ज्ञानावस्था में होने का आधार है; अर्थात सच्चाई को प्रमाणित करना |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)